सिद्ध पूजा भाषा

स्वयं सिद्ध जिन भवन रतनमई बिम्ब विराजै।
नमत सुरासुर इन्द्र, दरस लखि रवि शशि लाजै॥
चार शतक पचास आठ, भुवि लोक बताये।
तिन पद पूजन हेतु, भाव धरि मंगल गाये॥
मंगलमय मंगल करण, शिवपद दायक जानिकैं।
आह्वानन करके जजों, सिद्ध सकल उर आनिकै॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्ध परमेष्ठिन् ! अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्ध परमेष्ठिन् ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्ध परमेष्ठिन् ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

उज्जवल जल शीतल लाय, जिन गुण गावत है।
सब सिद्धन को सु चढ़ाय, पुण्य बढ़ावत है॥
सम्यक् सुक्षायक जान, यह गुण गावत है।
पूजौं श्रीसिद्ध महान, बलि बलि जावत है॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्ध परमेष्ठिभ्यों जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

कपूर सु केशर सार, चन्दन सुखकारी।
पूजौं श्रीसिद्ध निहार, आनन्द मनधारी॥
सब लोकालोक प्रकाश, केवल ज्ञान जग्यो।
यह ज्ञान सुगुण मनभास, निजरस माँहि पग्यो॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिभ्यों भवतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥२॥

मुक्ताफल की उनहार, अक्षत धोय धरे।
अक्षय पद प्राप्ति जा न, पुण्य भण्डार भरे॥
जग में सु पदारथ सार, ते सब दरसावै।
सो सम्यग्दर्शन सार, यह गुण मन भावै॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिभ्यों अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥३॥

सुन्दर सु गुलाब अनूप, फूल अनेक कहे।
श्री सिद्धन पूजत भूप, बहुविधि पुण्य लहे॥
तहाँ वीर्य अनन्तो सार, यह गुण मनमानो।
संसार समुद्रतैं पार, तारक प्रभु जानो॥४॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिभ्यों कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥४॥

फेनी गोजा पकवान, मोदक सरस बने।
पूजौं श्री सिद्ध महान, भूखविथा जु हने॥
झलकें सब एकहिबार, ज्ञेय कहें जितने।
यह सूक्ष्मता गुण सार, सिद्धन के सु तने॥५॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिभ्यों क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥५॥

दीपक की ज्योति जगाय, सिद्धन को पूजौं।
करि आरति सनमुख जाय, निरमल पर हू जों।
कुछ घाटि न वाढ़ि प्रमाण, अगुरुलघु गुण राख्यों।
हम शीस नवावत आय, तुम गुण मुख भाखो॥६॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिभ्यों मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥६॥

वरधूप सु दशविधि ल्याय, दश विधि गन्ध धरै।
वसु कर्म जलावत जाय, मानों नृत्य करैं।
इक सिद्ध में सिद्ध अनन्त, सत्ता सब पावै।
यह आवगाहन गुण सन्त, सिद्धन के गावै॥७॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिभ्यों अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥७॥

ले फल उत्कृष्ट महान, सिद्धन को पूजौं।
लहि मोक्ष परम गुण धाम, प्रभुसम नहिं दूजौं।
यह गुण बाधाकरि हीन, बाधा नाश भई।
सुख अव्याबाध सु चीन, शिव सुन्दरी सु लई॥८॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिभ्यों मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा॥८॥

जल फल भरि कंचन थाल, अरचन कर जोरी।
प्रभु सुनियो दीनदयाल, विनती है मोरी॥
कामादिक दुष्ट महान, इनको दूर करो।

तुम सिद्धसदा सुखदान, भव भव दुःख हरो॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिभ्यों अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥९॥

जयमाला

नमों सिद्ध परमात्मा अद्भुत परम रसाल।
तिन गुण महिमा आगम हैं, सरस रची जयमाल॥

पद्धरि छन्द

जय जय श्री सिद्धन कूं प्रणाम, जय शिव सागर के सुथान।
जय बलि बलि जात सुरेश जान, जय पूजत तन मन हर्ष ठान॥
जय क्षायिक गुण सम्यक्त्व लीन, जय केवलज्ञान सुगुण नवीन।
जय लोकालोक प्रकाशवान, यह केवल अतिशय हिये जान॥
जय सर्व तत्व दर से महान, सो दर्शन गुण तीजो महान।
जय वीर्य अनन्तो है अपार, जाकी पटतर दूजो न सार॥
जय सूक्ष्मता गुण हिये धार, सब ज्ञेय लख्यो एकहि सुवार।
इक सिद्ध में सिद्ध अनन्त जान, अपनी-अपनी सत्ता प्रमाण।
अवगाहन गुण अतिशय विशाल, तिनके पद वन्दे नमित भाल॥
कछु घाटि न बाधि कहे प्रमाण, गुण अगुरु लघु धारै महान॥
जय बाधा रहित विराजमान, सो अव्याबाध कही बखान।
ये वसुगुण हैं व्यवहार सन्त, निश्चय जिनवर भाषे अनन्त।
सब सिद्धनि के गुण कहे गाय, इन गुण करि शोभित है जिनाय।
तिनको भविजन मनवचन काय, पूजत वसु विधि अति हर्ष लाय॥
सुरपति फणपति चक्री महान, बलि हरि प्रतिहरि मनमथ सुजान।
गुणपति मुनिपति मिल धरत ध्यान, जय सिद्ध शिरोमणि जग प्रधान॥

सोरठा

ऐसे सिद्ध महान्, तुम गुण महिमा अगम है।
वरणन कर्‌यो बखान, तुच्छ बुद्धि भवि लाल जू॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिभ्यों महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

करता की यह विनती, सुनो सिद्ध भगवान।
मोहि बुलाओ आप ढ़िंग, यही अरज उर आन॥

इत्याशीर्वादः।